प्रार्थना सभा पुस्तिका

विषय सूची

1.गणेश वन्दना
2.गुरु वन्दना

सरस्वती वन्दना

3 याकुन्देन्दुतुषारहार धवला,।
4. रविरुद्र पितामह विष्णुनुतं।
5. वन्दना के इन स्वरों में
6. शाारदे माँ वन्दना स्वीकार कर।
7. म्हारे घट में उपजे ज्ञान
8. थानें मनाऊँ माँ शारदे।
9. माँ सरस्वती तेरे चरणों में
10.माँ सरस्वती वरदान दो।
11. वीणा वादिनि विमल वाणीदे।
12.हँस वाहिनी ऐसा वर दो।
13 जयति जय जय माँ सरस्वती।
14. हे हँस वाहिनी माँ, हम शरण में
15. हे हे सरस्वती शारदे
16. हे स्वर की देवी माँ।

ईश वन्दना

17 वह शक्ति हमें दो दयानिधे
18 तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
19. तू ही राम है तू रहीम है।
20. मिलता है सच्चा सुख ।

http://rajteachers.com

22 उतरो तम पथ पर ज्योति,
23. खुद को जय करें।
24. हे दयामय आप ही, संसार
25. ए मालिक तेरे बन्दे हम।
26 स्वागत गीत
27 प्रतिज्ञा
28 राष्ट्रगान
29 राष्ट्रगीत
30 प्रेरणास्पद दोहे
31 इण धरती रो म्हाने अभिमान हो
32. हिन्द देश के निवासी
33 धरती धोरां री।
34 जै बजरंगी जै माँ काली
35 म्हाने घणो सुहाणों लागे जी।
36 सामान्य ज्ञान के प्रश्न
37 स्वागत गीत
38 सामान्य ज्ञान के प्रश्न

आचार्य लीलाधर शर्मा
रा.उ.प्रा. वि. हनुमान नगर "श्रीबालाजी"
जिला नागौर (राज.)

❀ गणेश वन्दना ❀

गजाननं भूत गणादि सेवितं ,
कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकं,
नमामि विध्नेश्वर पादपंकजम्।।1।।
कर कंकण शीश जटा मुकुटम् ।
मणि माणक मुक्ता आभरणम्।
गज नील गजेन्द्र समानयुतम्।

❀ गुरुवन्दना ❀

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

http://rajteachers.com

रविरुद्र पितामह विष्णुनुतं।
हरिचन्दन कुंकुम पंकयुतम्।।
मुनिवृन्द गणेन्द्र समानयुतं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।1।।
शशि शुद्ध सुधा हिम धाम युतं।
शरदम्बर बिंब समान करम्।।
बहु रत्न मनोहर कान्तियुतं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।2।
कनकाब्ज विभूषित भूति भवं।
भव भाव विभाषित भिन्न पदम्।।
प्रभुचित समाहित साधु पदं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।3।
भवसागर मज्जन भीतिनुतं।
प्रतिपादित संततिकारमिदम्।।
विमलादिक शुद्ध विशुद्धपदं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।4।
मतिहीन जनाश्रय पादमिदं।
सकलागमभाषित भिन्न पदम्।।
परिपूरित विश्वमनेकभवं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।5।।
परिपूर्णमनोरथ धामनिधिम्।
परमार्थ विचार विवेक निधिम्।।
सुरयोषित सेवित पादतलं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।6।।
सुरमौलि मणिद्युति शुभ्रकर।
विषयादि महाभय वर्णहरम्।।
निजकान्ति विलेपित चन्द्र शिवं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।
गुणनैक कुलस्थिति भीतिपदं।
गुण गौरव गर्वित सत्यपदम्।।
कमलोदर कोमल पादतलं।
तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।8।।

http://rajteachers.com

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि, र्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती, निःशेष जाडयापहा।

शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमा ,माद्यांजगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां जाडयान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिता।

शारदे माँ वन्दना स्वीकार कर।
शरण में आए हैं नैया पार कर।
शारदे माँ .....।
जय वीणा वादिनी कमलासिनी।
दूर कर अज्ञान तम पद्मासिनी
ज्ञान की ज्योति जला उद्धार कर।
शारदे माँ .....।
सुमन श्रद्धा से करें माँ अर्चना।
नित्य चरणों में करें माँ वन्दना।
अज्ञानी नादान है माँ प्यार कर।
शारदे माँ .....।
शान्ति की सरिता बहे संसार में।
शुद्ध जीवन हो लगे उपकार में।
नीति दे माँ विश्व का कल्याण कर।
शारदे माँ .....।
हँस वाहिनी वर दे विद्यादान दे।
मधुर कण्ठ दे माँ भक्ति का दान दे।
जन जन में माँ प्रेम का संचार कर।

http://rajteachers.com

❁ सरस्वती वन्दना ❁

म्हारा घट में उपजे ज्ञान,
सरस्वती माँ दे वरदान।
मानख जमारो रतन महान,
जतन बिना यो धूल समान।
झट म्हारा घट रा पट खोल,
क्यूं अणबोली है तूं बोल।
भक्ति भाव को ले ले मोल,
विद्या रो धन नमतो तोल।
हे माँ पेहल्याँ मने सुधार,
मैं सुधरूं सुधरे परिवार।
परिवाराँ रो ले आधार,
सुधरे यो सगलो संसार।
उठ मन वृथा दुख ने छोड़,
मची शिक्षाकर्मी री होड़।
पाकी डाली रा फल तोड़,
भण अक्षर शब्दां ने जोड़।
जन जन पढ लिख बने महान,
माँ तू म्हारी विनती मान।
शिक्षाकर्मी रो चाल्यो अभियान,
होवे जन–जन रो कल्याण।

वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिलालो।
वन्दनी माँ को न भूलो राग में जब मस्त झूलो।।
अर्चना के रक्त कण में एक कण मेरा मिलालो।
वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिलालो।
जब हृदय के तार बोले शृंखला के बन्ध खोले।
हे जहाँ बल शीश अगणित एक कण मेरा मिलालो।

तर्जः दिल के अरमां आंसुओं में बह गए

http://rajteachers.com

थानें मनाऊँ माँ शारदे, थानें मनाऊँ माँ शारदे।
ओ म्हारा घट रा पट दो खोल,
जय–जय शारद माँ।।
पूजा हिलमिल म्हें करां, पूजा हिलमिल म्हें करां,
ओ थारी घणी रे करां मनवार,
जय–जय शारद माँ।।
थारी उतारां माँ आरती, थारी उतारां माँ आरती
ओ थारें भेंट करुं फूलमाळ,
जय जय शारद माँ।।
थांरी किरपा सूं सब हुवे माँ,
थांरी किरप सूं सब हुवे माँ,
ओ म्हारों बेड़ो रे लगा दीज्यो पार,
जय–जय शारद माँ।।
अज्ञानी ने ज्ञान दो माँ, अज्ञानी ने ज्ञान दो माँ
ओ माँ मूरख सूं मिनख बणाय,

वीणा वादिनि विमल वाणीदे, विद्या दायिनि वन्दन।
जय विद्या दायिनि वन्दन
अरुण लोक से वरुण लहर तक गुंजारित तव वाणी
ब्रह्मा विष्णु रूद्र इन्द्रदिक, करते सब अभिनन्दन।
जय विद्या दायिनि वन्दन
तेरा भव्य भण्डार भारती, है अद्‌भुत गतिवारा
ज्यों खर्चे त्यों बढे निरन्तर, है सबका अवलम्बन।
जय विद्या दायिनि वन्दन
नत मस्तक हम माँग रहे, विद्या धन कल्याणी
वरद हस्त रख हम पर जननी रहे न जग में क्रन्दन

http://rajteachers.com

माँ सरस्वती तेरे चरणों में ,
हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को ,
दो नयन कटोरे लाए हैं।।
अज्ञान अंधेरा दूर करो और,
ज्ञान का दीप जला देना।
हम ज्ञान की शिक्षा लेने को,
माँ द्वार हिारे आए हैं।।
हम अज्ञानी बालक तेरे,
अज्ञान दोष को दूर करो।
बहती सरिता विद्या की,
हम उसमें नहाने आए हैं।।
हम साँझ सवेरे गुण गाते,
माँ भक्ति की ज्योति जला देना।।
क्या भेंट करु उपहार नहीं ,
हम हाथ पसारे आए हैं।।
माँ सरस्वती तेरे चरणों में ,
हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को ,

माँ सरस्वती वरदान दो,
मुझको नवल उत्थान दो।
यह विश्व ही परिवार हो,
सब के लिए सम प्यार हो।
आदर्श, लक्ष्य महान हो।
माँ सरस्वती.....।
मन, बुद्धि, हृदय पवित्र हो,
मेरा महान चरित्र हो।
विद्या विनय वरदान दो।
माँ सरस्वती.....।
माँ शारदे हँसासिनी,
वागीश वीणा वादिनी।
मुझको अगम स्वर ज्ञान दो।

http://rajteachers.com

हँस वाहिनी ऐसा वर दो,
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
पढ लिखकर माता हम, विद्वान बन जायेंगे
भारत से अनपढता को दूर भगायेंगे।
दुखियों की सेवा दिल में भर दो।
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
हँस वाहिनी.....।
झूठ और पाप के हम पास नहीं जायेंगे
अन्यायी के आगे हम शीश ना झुकायेंगे।
दुशमन को सज्जन दिल से करदो
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
हँस वाहिनी.....।
भाषा का विवाद मैया देश से मिटायेंगे।
हम सब एक हैं यह भावना जगायेंगे।
वाणी में मैया ओजस भर दो।
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
हँस वाहिनी.....।

जयति जय जय माँ सरस्वती, जयति पुस्तक धारणी।
जयति पद्मासना माता, जयति शुभ वर दायिनी।
जगत का कल्याण कर माँ, तुम हो विद्या दायिनी।
जयति जय जय माँ .....।
कमल आसन छोड़ दे माँ, देख जग की दुर्दशा।
शान्ति की सरिता बहादे,फिर से जग में जननी।
जयति जय जय माँ .....।

हे हँस वाहिनी माँ, हम शरण में आये हैं।
घर ज्योतिर्मय कर दे, अभिलाषा लाए हैं।
तुम वीणा पाणि हो, विद्या और वाणी हो।
विज्ञान की हो जननी, जन जन क्ल्याणी हो।
तव चरणों में मैया, हम शीश झुकाए हैं।
तेरे कर में पोथी है, तू ज्ञान की ज्योति है।
विद्वान बना देती, जिस पर खुश होती है।

http://rajteachers.com

हे हे सरस्वती शारदे
संकृति कला सृशोहिनी, साहित्य ज्योति विमोहिनी।
सुर उर मधुर मृदु गीत के, तिन अमित नव झंकार दे।
हे हे सरस्वती.....।
आनन्द ऋतु ऋतु रंजनी, शुभ्रात्म सौरभ संगनी।
हे शब्द वीण वन्दनी, स्वर ताल लय अधिकार दे।
हे हे सरस्वती.....।
कुन्देन्दु तन तन्द्रा तरल, अरूणेन्द्र मन निश्चल प्रबल।
नीलेन्दु वसना भारती, पीतेन्दु प्रभु विस्तार दे।

हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो।
हम गीत सुनाते हैं, संगीत की शिक्षा दो।
अज्ञान ग्रसित होकर, क्या गीत सुनायें हम।
टूटे हुए शब्दों से, क्या स्वर को सुनाएं हम।
दो ज्ञान राग माँ तुम, वाणी में मधुरता दो।
सरगम का ज्ञान नहीं, शब्दों में सार नहीं।
तुम्हें आज सुनाने को, मेरी मैया कुछ भी नहीं।
संगीत समन्दर से, स्वर ताल हमें दे दो।
भक्ति ना शक्ति है, शब्दों का ज्ञान नहीं।
तुम्हे आज सुनाने को, मेरी मैया कुछ भी नहीं।
गीतों के खजाने से, एक गीत हमें दे दो।

http://rajteachers.com

❀ प्रार्थना ❀

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम,
जग जीवन सफल बना जावें।

हम दीन दुखी निबलों विकलों
के सेवक बन संताप हरे।
जो हैं अटके भूले भटके,
उनको तारें खुद तर जावें।

छल दम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ–
अन्याय से निशि दिन दूर रहे।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
सुचि प्रेम सुधारस बरसावें।

निज आन मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया,

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।
तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे।
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।
तुम्ही हो नैया तुम्ही खेवैया।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।
जो खिल सके हैं वो फूल हम हैं।
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

http://rajteachers.com

ईश वन्दना

तू ही राम है, तू रहीम है,
तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरु तू यीशू मसीह
हर नाम में तू समा रहा।
तू ही राम ह.....।
तेरी जात पाक कुरान में ,
तेरा दरस वेद पुराण में।
गुरु ग्रन्थजी के बखान में,
तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम ह.....।
अरदास है कहीं कीरतन
कहीं रामधुन कहीं आवहन।
विधि भेद का यह है सब रचन,
तेरा भक्त तुझको बुला रहा।
तू ही राम है.....।

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अँधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।
दया कर.....।
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवक चर बना देना।
दया कर.....।
बहादो प्रेम की गंगा दिलो में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल के प्रभो रहना सिखा देना।
वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभो हमको सिख देना।

http://rajteachers.com

मिलता है सच्चा सुख केवल
भगवान तुम्हारे चरणो में।
यह विनती है पल पल छिन्न छिन्न
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
चाहे काँटो पे मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....।
चाहे बैरी कुल संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों और अँधेरा हो।
पर चित ना डगमग मेरा हो,
रहे ध्याान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....।
जिव्हा पर तेरा नाम रहे,
दिन रात सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे,
रहे ध्याान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....।

http://rajteachers.com

उतरो तम पथ पर ज्योति,
चरण उतरो उतरो उतरो।
पद चिह्न बने नखतावलियाँ,
झूमे दिशि दिशि दीपावलियाँ।
जन शुभ युग मंगल किरणों की,
छवि मांग रहा तुमसे कण कण।
उतरो उतरो उतरो.....।

अवनी अम्बर के अधर मिले,
मानव संस्कृति के सुमन खिले।
जन मानस की लहरी करले,
पावन ज्योत्स्ना का पुण्य वरण।
उतरो उतरो उतरो.....।

तुम छिपे यहीं यमुना तट पर,
मोहन भरते मुरली का स्वर।
दो नवल रश्मि जग को जिससे,
अणु अणु आलोकित हो क्षण क्षण।

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।

भेदभाव अपने दिल में साफ कर सकें।
दूसरों से भूल होतो माफ कर सकें।।
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।
हमको.....।

मुश्किल पड़े तो हम पर इतना करम कर।
साथ दें तो धर्मका , चलें तो धर्म पर।।
खुद पे हौसला रहे, बदी से डरे।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।।
हमको.....।

http://rajteachers.com

❀ प्रार्थना ❀

हे दयामय आप ही, संसार के आधार हो।
आप ही करतार हो, हम सबके पालनहार हो।
जन्म दाता आप ही, माता पिता भगवान हो।
सर्व सुखदाता सखा, भ्राता हो सम प्राण हो।
आपके उपकार का हम, ऋण चुका सकते नहीं।
बिन कृपा के शान्ति सुख का, सार पा सकते नहीं।
दीजिये यह मति, बने हम सद्‌गुणी संसार में।

ए मालिक तेरे बन्दे हम,
ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले, और बदी से डरे।
ताकि हँसते हुए निकले दम।
ए मालिक.....।
ये अँधेरा घना छा रहा,
तेरा इंसान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर।
सुख का सूरज छिपा जा रहा।
है तेरी रोशनी में जो दम,

अभिनन्दन करते हैं हम वन्दन करते हैं।
पलको के आँचल में हम सब खुशियां भरते हैं।
श्रीमान् आप पधारे ओ हो धन्य है भाग हमारे।
फूल नहीं है दिल में हम न्यौछावर करते हैं।
पलको के आँचल में.....।
खुशी से दिल भर आया ओ हो
लता सा मन लहरायें।
हृदय प्रफुल्लित मन अति पुलकित गीत संवरते हैं।
पलको के आँचल में.....।

http://rajteachers.com

भारत मेरा देश है। समस्त भारतीय
मेरे भाई बहिन हैं।

मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ तथा मुझे इसकी
विपुल एवं विविध थातियों पर गर्व है। मैं इसके
योग्य बनने के लिए सदैव प्रयत्न करता रहूँगा।

मैं अपने माता पिता अध्यापक एवं समस्त बड़ों
का सम्मान करूँगा तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ
शिष्टता व्यवहार करूँगा।

मैं अपने देश एवं देशवासियों के प्रति निष्ठा
बनाए रखने की प्रतिज्ञा करता हूँ।
मेरी प्रसन्नता केवल उनके कल्याण एवं उनकी

जन–गण–मन अधिनायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा
द्राविड़–उत्कल–बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आषीष मांगे।
गाये तब जय गाथा।
जन–गण–मंगलदायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे ,जय हे,जय हे

http://rajteachers.com

वन्दे मातरम् , वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितः द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्

गुरु गोविन्द दोऊं खड़े काके लागूँ पायँ।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।1।।
कबिरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खेर।
ना काहूँ से दोस्ती ना काहूँ से बैर।।2।।
कबिरा खड़ा बाजार में लिए मुराड़ा हाथ।
जो घर जाले आपना चले हमारे साथ।।3।।
साँई इतना दीजिए जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय।।4।।
रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई का करि है तलवारि।।5।।
बड़ा भया तो क्या भया जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागहि अति दूर।।
रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे जुरे गाँठ पड़ जाय।।7।।
तुलसी संत सुअम्ब तरु फूल फलहि पर हेत।
इतते ये पाहन हनत उतते वे फल देत।।8।।
तुलसी या संसार में भाँति भाँति के लोग ।
सबसौं हिल मिल चालिए नदी नाव संयोग।।9।।
कर ले सूघि सराहि उर रहे धारि गहि मौन।
गंधि गंध गुलाब की गंवई गाहक कौन।।10।।
लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल।

http://rajteachers.com

इण धरती रो म्हाने अभिमान हो
इण पर वारां प्राण हो
आ धरती हिन्दवाण री आ धरती हिन्दुस्थान री
उत्तर में पहरे पर उभो परवत राज हिमाले है।
दक्षिण में रत्नाकर सागर इण रा चरण पखारे है।
इण धरती री करे आरी सूरज चाँद हो
इण पर वारां प्राण हो.....।
काश्मीर री केसर क्यारयां
देव रमण ने तरसे है
गंग सिन्ध रे मैदानां में सोने रो मेह बरसे है।
इण धरती पर अवतरिया खुद श्री भगवान हो।
इण पर वारां प्राण हो.....।
कल–कल करती नदियाँ जाणे
इण री गाथा गावे है।
चम–चम करता मरु रा टीला चाँदी ने शरमावे है।
अमरायाँ में आम्बा और खेतां में धान हो ।
इण पर वारां प्राण हो.....।
जद दुनिया रो मिनख जमारो
नागो बूचो डोले हो।
इण धरती रो टाबर–टाबर वेदाँ रा मन्त्र बोले हो।
घूम–घूम दुनिया में या फैलायो ज्ञान हो।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है,
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला गुलाब जूही चम्प चमेली,
यारे–प्यारे फूल गूँथे माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी,
रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,
जाके मिलगई सागर में हुई सब एक हैं।
हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है।

http://rajteachers.com

धरती धोरां री ओ हो धरती धोरां री
आ तो सुरगा ने शरमावे,
इ पर देव रमण ने आवे
इ रो जस नर नारी गावै धरती धोरां री
ओ हो धरती धोरां री.....।
सूरज कण–कण ने चमकावे,
चन्दो इमरत रस वरसावे
तारा निछरावळ कर ज्यावे धरती धोरां री.....।
काळा बादलिया गहरावे,
बिरख धूधरिया घमकावे
बिजली डरती ओला खावे धरती धोरां री.....।
लुल–लुल बाजरियो लहरावे,
मक्की झालो दे र बुलावे।
कुदरत दोन्यु हाथ लुटावे धरती धोरां री.....।
पंछी मधरा–मधरा बोले,
मिसरी मीठे सुर सूं घोले
झीणो बायरियो पंपोले धरती धोरां री.....।
इ रा फल फुलड़ा मन भावन
इ रे धीणो आंगण–आंगण
बाजे सगला सू बड़ भागण धरती धोरां री.....।
आबू आभे रे परवाणे,
लूणी गंगाजी ही जाणे

म्हाने घणो सुहाणो लागे जी , प्यारो राजस्थान।
रंगीलो राजस्थान, अलबेलो राजस्थान।
म्हाने घणो सुहाणो .....।
ऊँचा–ऊँचा टीबा माथे, ऊँटा रो ओषाण।
नागौरी बळद्या दौड़े हे सारा हिन्दुस्थान।
म्हाने घणो सुहाणो .....।
उदयपुर झीलां री नगरी, जैपरियो गणगौर।
भड़कीलो अजमेर अठै है, बांको गढ चित्तौड़।
म्हाने घणो सुहाणो .....।
मकराणा को भाटो धोळो, सांभर लूण की खान।
आमेर री शिला देवी,ल्यायो राज मान।
म्हाने घणो सुहाणो .....।

http://rajteachers.com

अजमेर के ख्वाजा बाबा, पुष्कर रो स्नान।
म्हाने घणो सुहाणो .....।
मीरां रानी महल छोड़ियो, पन्ना रो बलिदान।
जौहर में ज्वाला बन चमकी, पदमण कर स्नान।

जै बजरंगी जै माँ काली,
बम बम हर हर बोलो रे बेली।
भारत रो इतिहास उजलो,
चिनोक पानो खोलो रे बेली।
यूनानी जोधो सेल्यूकस, चढ भारत पर आयो हो
पीठ उपर पड़ी गदागद, मोर जियां कुरलायो हो।
बेटी देय दायजो दीन्यो, होई जद जीवारी रे बेली।
जै बजरंगी.....।
अकबर हो हिरदे रो कालो, मन में कुबद बिचारी ही।
छाती पर किरणा चढ बैठी, कर में तेज कटारी ही।
पकड्या कान नाक रगड्यो,
हो होई जद जीवारी रे बेली।
जै बजरंगी.....।
अमरसिंह राठौड़ सूरमो, गाळ सळावत काढी ही।
सिंह भरे दरबार दढूक्यो, नाड़ दुष्ट री बाढी ही।
छोड़ तखत शाहजहाँ ही भाग्या,
` खिड़की जड़ली आडी र बेली।
जै बजरंगी.....।
जलियाँ वाले बाग मायने, डायर जुलम कर्यो भारी।
भरी सभा में गोलियाँ दागी, मरया घणा ही नर नारी।
उधमसिंह जद जाय बिलायत बिने गोली मारी रे बेली
जै बजरंगी.....।

http://rajteachers.com

1 भारत की राजधानी का क्या नाम है ?
2 राजस्थान की राजधानी का क्या नाम है ?
3 राजस्थान की मुख्यमन्त्री कौन है ?
4 राजस्थान की राज्यपाल कौन है ?
5 राजस्थान के शिक्षामन्त्री कौन है ?
6 राजस्थान का राज्य पशु कौन है ?
7 राजस्थान का राज्य पक्षी कौन है ?
8 राजस्थान का राज्य वृक्ष कौनसा है ?
9 राजस्थान का राज्य पुष्प का नाम बताओ।
10 भारत का राष्ट्रीय पशु कौन है ?
11 भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन है ?
12 राष्ट्र गान(जन–गण–मन) किसने लिखा ?
13 राष्ट्र गीत(वन्दे मातरम्) किसने लिखा ?
14 हमारे देश के प्रधान मन्त्री कौन है ?
15 हमारे देश के राष्ट्रपति कौन है ?
16 हमारे देश के गृहमन्त्री कौन है ?
17 हमारे देश के रक्षा मन्त्री कौन है ?
18 हमारे देश के राष्ट्रीय ध्वज नाम क्या है ?
19 पंचायत समिति के मुखिया को क्या कहते हैं ?
20 ग्राम पंचायत के मुखिया को क्या कहते हैं ?
21 करणीमाता का प्रसिद्ध मन्दिर कहाँ है ?
22 हमारे जिले का क्या नाम है ?
23 हमारी तहसील का क्या नाम है ?
24 राजस्थान में कुल कितने जिलें हैं ?
25 भारत में कुल कितने राज्य हैं ?
26 क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य
27 संसार में कुल कितने महाद्वीप है ?
28 संसार में कुल कितने महासागर हैं ?
29 निम्न राज्यों की राजधानियाँ लिखिए।
30 पंजाब गुजरात उत्तरप्रदेश जम्मू कश्मीर
31 मुख्य ऋतुएं कितनी होती है ? नाम लिखिए।
32 हमारी राष्ट्रीय भाषा कौनसी है ?
33 वेद कितने है ?
34 रामायण के रचियता कौन है ?
35 महाभरत के रचियता कौन है ?

http://rajteachers.com

37 भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री कौन थे ?
38 भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?
39 भारत की राजधानी का क्या नाम है ?
40 पुराण कितने हैं ?
41 शास्त्र कितने है ?
42 आस्तिक दर्शन कितने है ?
43 नास्तिक दर्शन कितने है ?

हो आया आया ये शुभ दिन आया,
हमारे मन को शया।
कहें किस जुबान से,
स्वागत करते हैं तुम्हारा स्वागत गान से।।
हे श्रीमान् अतिथि महोदय,
आज पधारे आंगन में ।
स्वागत और सत्कार आपका,
भरे हुए इस प्रांगण में।
मोर पप्पैया, चील सुरैया
कोयल करे पुकार।
कि भँवरा बोले यहँ वहाँ डोले,
माला में इसे घोले।
सुरीली मीठी तान से,
स्वागत करते हैं तुम्हारा स्वागत गान से।।
कैसे स्वागत करें आपका
स्वागत करने को केवल ये पुष्पों की इक माला है।
हम तुम्हारे कृपा तुम्हारे दरश हुए श्रीमान्।
क्यारी–क्यारी खिली है फुलवारी हमारे मैदान में।
स्वागत करते हैं तुम्हारा स्वागत गान से।।

http://rajteachers.com

समा मुनाया. चत्रु चत्रु दासा.
दसे समान्या तेषू दुध्याबरणो.
नसीस वरणो. पूरब हंस पारो दीरघा.
सारो बरणा बिणज्योनामी.इकरादेणी.
संधकराणी. कादीनाबुं विणज्योनामी.
ते विरघा पंचा. विरघानाबुं. प्रथम दुतीयो.
संषोसाइवा.घोषा घोष मितारणी.
आयणु नासका. निमाणु नामा.
अणसताजेरे ल्लवा.
रुकमण संषोसहा.आयती विसतज्युनीया.
कायतीजा वा मुलीया. पायती वद मानीया.
आयो रतन सवारो.पूरया फल्यो रथोः पाला रुप
दुपदुविणज्योनामी. सरुबरु बरणाने तुनेत करमया.
रामसलाकीजैतु. लषो पचाईडा. दुरगासंधी.
एती संधी सूत्रता. प्रथम पाटी सुभकृता.
ईश्वरो जयति. संपूर्ण. यह सीधा.
व्याकरण रीति से घोर अशुद्ध है।
मारवाड़ी रीति के अनुसार है।
यह सीधो बरणाशुद्ध उच्चारण के

http://rajteachers.com

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

– वेदव्यास

विद्या कामधेनु गाय है।

– चाणक्य

बिना अभ्यास के विद्या विष के समान है।

– अज्ञात

विद्या अमूल्य और अभावक धन है।

– ग्लडस्टन

विद्या स्वयं ही शक्ति है।

– बेकन

जिसके पास विद्या रुपी नेत्र नहीं–
वह अन्धे के समान है।

– हितोपदेश

सुकर्म विद्या का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए।

– सर पी. सिडनी

विद्या के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है।

–फुलर

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा
का आधार है।

– महात्मा गाँधी

शिक्षा का महान उद्‌देश्य ज्ञान नहीं कर्म है।

– हर्बट स्पेन्सर

शिक्षा जीवन की पस्थितियों का सामना करने की
योग्यता का नाम है।

– डा. जान जी. हिबन

शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण है।

–हर्बट स्पेन्सर

Knowledge itself is power.

-Bacon

There is no royal road to learning.

Education is cheap defence of nation.

- Burke

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

गीता

http://rajteachers.com

आचार परमोधर्मः ।।
अहिंसा परमोधर्मः।।
मातृ देवो भव।।
पितृ देवोभव।।
आचार्य देवो भव।।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।

ध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं।

सुखार्थिनः कुतो विद्या
विद्यार्थिनः कुतो सुखम्।
सुखार्थी चेत् त्यजेत् विद्यां,
विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।।
— चाणक्य

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।
विद्या कामधेनु गाय है।
अहंकार नशे का मुख्य रुप है।

आचारः परमो धर्मः।
सत्यं वद। धर्मं चर।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं
विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति

http://rajteachers.com

विद्या के सम धन नहीं,
जग में कहत सुजान
विद्या ही से मनुज लघु,
होवे भूप समान।।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।

To much rest it self become a pain.

They walk with speed who walk alone.

कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन।।
मा कर्मफलहेतुर्भू
र्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।
श्रीमद् भगवद् गीता

मेहनत जो करते काम,
जग में होता उसका नाम।।
परिश्रम का फल मीठा होता है।

माता पिता बैरी भए,
जे न पढाए बाल।
जीवन भर खिंचती रहे,
अनपढ जन की खाल।।
माता शत्रु पिता वैरी
येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये

http://rajteachers.com

पूरा सद्गुरु न मिला मिली न पूरी सीख।

शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है।
शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण है।

विद्या ददाति विनयं
विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति
धनाद् धर्म ततः सुखम्।।

दया सबसे बड़ा धर्म है।
बिना अभ्यास के विद्या विष के समान है।
विद्या स्वयं ही शक्ति है।
दयाशील अन्तःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है।

http://rajteachers.com